

- ① धातुओं में सर्वप्रथम प्रयोग हुआ → तांबा
- ② तांबे एवं पाषाण का प्रयोग करने वाली संस्कृति कहलाती है - कैल्कोलिथिक
- ③ भारत की ताम्रपाषाण संस्कृति छप्पा सभ्यता की है - उत्तरी
- ④ ताम्रपाषाण संस्कृति मुख्यतः थी - ग्रामिण
- ⑤ ताम्रपाषाण वस्तुओं पाई गयी है - दण्डू राजस्थान, मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग  
पश्चिममहाराष्ट्र, मध्यप्रदेश का पश्चिम दण्डू
- ⑥ दण्डू राजस्थान के उदात्तल है - अहार एवं गिलुन्द (बनास नदी घाटी)
- ⑦ पश्चिममध्यप्रदेश के उदात्तल है - मालवा कथथा एवं सरण
- ⑧ महाराष्ट्र के उदात्तल है - अहमदनगर जिला के जोरवे, नेवासा, दैमावाद्  
उणे के चंदोली सौनगांव, इनामगांव, प्रकाश नाथिक  
↳ सम्मिलित रूप से जोरवे संस्कृति कहलाती है
- ⑨ जोरवे स्थित है - अहमदनगर जिले के शाखा नदी के प्रवाह के तट
- ⑩ जोरवे संस्कृति थी - ग्रामिण
- ⑪ जोरवे संस्कृति की नगरीकृत स्थल थे - दैमावाद् इनामगांव
- ⑫ पूर्वी भारत के उदात्तल :- बिहार - चिराई, सैनुवार, बौनपुर, ताण्डीह  
बंगाल - पांडु सजार दिवी, मणिषदल
- ⑬ अहार का प्राचीन नाम था - तांबवती
- ⑭ अहार संस्कृति का काल है - 2100 - 1500 BC, मुख्य केन्द्र गिलुन्द
- ⑮ तांबे की छेनी मिली है - चंदोली से
- ⑯ NOTE → ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियों के लोग गाय ब्रह्म बकरी और भैंस  
सुआ पालते थे, हिरण का शिकार करते थे, छोटे बड़े अपरिचित थे, जोमा  
छात्रे थे, अन्न चावल गेहूँ उपजाते थे, इसके अलावा बाजरा, मसूर, उड़  
और मुंग से खेती करते थे
- ⑰ सभी अनाजों की खेती के साक्ष्य मिले हैं बहर एवं अलसी भी - नवदोली
- ⑱ गिलुन्द में पक्की इटो का प्रयोग हुआ था - 1500 BC के आस पास
- ⑲ अहार के लोग रहते थे - पक्की इटो के बने पत्थर के बने धारों में
- ⑳ जोरवे संस्कृति का सबसे बड़ा स्थल था - दैमावाद्
- ㉑ गोलकार गड्ढे वाले मकान मिले हैं - इनामगांव में
- ㉒ पाँच कमरों वाला एक मकान मिला है - इनामगांव में, संभवतः सरदार का
- ㉓ ताम्रपाषाण कालीन लोग मनके बनाते थे - कर्नेलियन, स्टेटाइट, क्वार्ट्ज

- 24) मृतक को कलश में रखकर उ. - द. की स्थिति में गाड़े थे - महाराष्ट्र में
- 25) ताम्रपाषाण कालीन में लोग पुजा करते थे - मातृदेवी की धार्मिक पंथ का प्रतीक जानवर था - वृषभ
- 26) गणेश्वर स्थित है - राजस्थान में
- 27) हडप्पा सभ्यता को तांबे की श्राद्धि करता था - गणेश्वर
- 28) गणेश्वर का कालक्रम है - 2800 - 2200 BC
- 29) वे हडप्पा स्थल जो प्राकृ. हडप्पा भी माने जाते हैं - फालीबंगा, क्वावली, कोरदजी
- 30) कथवा संस्कृति जो हडप्पा सभ्यता से पहले की थी, का कालक्रम है - 2000 - 1800 BC
- 31) मालवा संस्कृति - 1700 - 1200 BC
- 32) जारवे संस्कृति - 1400 - 700 BC
- 33) सिंध की वह ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति जो हडप्पा के समकालीन थी - आमरी
- 34) ताम्रपाषाण संस्कृतियां समाप्त हो गयीं - 1200 - 1000 तक (जारवे 700 BC)
- 35) पश्चिम भारत और पश्चिम मध्य प्रदेश की ताम्रपाषाण संस्कृतियों के विलुप्त होने का मुख्य कारण क्या था - वर्षा का अभाव
- 36) गंगा के मैदान वाले ताम्रपाषाण संस्कृतियों के साथ क्या हुआ - लौह अवनत्य आ गयी और वे क्षैतिज बन गये
- 37) चित्रित मृदभांड का प्रथम प्रयोग किया - ताम्रपाषाण संस्कृतियों ने
- 38) किठे बंदी वस्तियां मिलती हैं - कथवा, एरण (M.P) तथा इनामगांव (M.P)
- 39) महाराष्ट्र में शवों को दफनाने की दिशा थी - उत्तर-दक्षिण दिशा में
- 40) दक्षिण भारत में शव दफनाने की प्रथा थी - पूर्व-पश्चिम दिशा में
- 41) पश्चिम भारत में शवाधान प्रचलित था - संकलन शवाधान
- 42) सबसे विद्याल निधि मिट्टी खल से मिली है - गुंगेरिया से (M.P)
- 43) गौरिक मृदभांड का काल माना गया है - 2000 - 1400 BC
- 44) गौरिक मृदभांड का सबसे मोटा जमाव मिला है - राजस्थान के जोधपुरा से
- 45) गौरिक मृदभांड संस्कृति थी - हडप्पा के समकालीन